Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 14.12.18 मस्जिद बैतुल फ़तूह, मार्डन, लंदन।

आँज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान एवं उच्च स्तरीय बद्री सहाबी हज़रत मिस्तह बिन असासा रज़ीअल्लाहु अन्हु का वर्णन

हज़रत मिस्तह बद्र के युद्ध सहित समस्त युद्धों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए उनका एक उच्च स्तर था, अल्लाह तआला ने उनका अंजाम शुभ किया तथा उस स्तर को स्थापित रखा। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द करता चला जाए

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

सहाबियों के वर्णन में से आज हज़रत मिस्तह बिन असासा का वर्णन होगा, उनका नाम औफ़ तथा उपनाम मिस्तह था और उनकी वालिदह हज़रत उम्मे मिस्तह सलमा बिन सख़र थीं जो हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु अन्हु की मासी रीता सुपुत्री सख़र की बेटी थीं। हज़रत मिस्तह बद्र के युद्ध सहित अन्य सभी युद्धों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। हिजरत के आठ महीने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस को साठ अथवा एक रिवायत के अनुसार अस्सी सवारों के साथ भेजा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस के लिए एक सफ़ेद रंग का झंडा बाँधा जिसे मिस्तह बिन असासा ने उठाया। इस अभियान का उद्देश्य यह था कि क़ुरैश के व्यापारी दल को मार्ग में ही रोक लिया जाए। क़ुरैश के दल का अमीर सुफ़यान था, उस दल में 200 आदमी थे, सहाबियों की जमाअत ने राबिक़ नामक स्थान पर उस दल को पा लिया। यह दल केवल व्यापारिक दल नहीं था अपितु युद्ध के सामान से भी सुसज्जित था और जो लाभ होना था उस दल को, वह भी मुसलमानों के विरुद्ध आक्रमण में उपयोग होना था क्यूँकि घटनाक्रम से पता चलता है कि वे पूर्ण रूप से आक्रमण के लिए तय्यार थे। इस प्रकार जब ये लोग गए तो दोनों पक्षों की ओर से तीर चलाने के अतिरिक्त कोई मुक़ाबला नहीं हुआ तथा युद्ध के लिए नियमानुसार पंक्तिबद्ध भी नहीं हुए। इस अवसर पर हज़रत मिक़दाद बिन असवद तथा हज़रत ईनिया बिन ग़ज़वान अवसर पाकर मुशरिकों की सेना से निकल कर मुसलमानों में आ मिले क्यूँकि उन दोनों ने इस्लाम क़बूल किया हुआ था। मुशरिकों पर मुसलमानों का इतना रौब पड़ा कि वे भयभीत होकर वापस चले गए तथा मुसलमानों ने भी उनका पीछा नहीं किया क्यूँकि युद्ध का लक्ष्य नहीं था। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर के युद्ध के अवसर पर हज़रत मिस्तह तथा इब्ने इलयास को पचास वस्क़ गन्दुम प्रदान किया। आपकी मृत्यु 56 वर्ष की आयु में 34 हिजरी में हज़रत उस्मान की ख़िलाफ़त के ज़माने में

हुई और यह भी कहा जाता है कि आप हज़रत अली की ख़िलाफ़त के दौर तक जीवित रहे तथा हज़रत अली के साथ सिफ़्फ़ीन के युद्ध में शामिल हुए तथा उसी वर्ष 37 हिजरी में देहान्त हुआ।

हज़रत मिस्तह वही व्यक्ति हैं जिनके जीवन यापन व्यय का प्रबन्ध हज़रत अबू बकर किया करते थे किन्तु जब हज़रत आयशा रज़ी. पर आरोप लगाया गया तथा आरोप कर्ताओं में मिस्तह भी शामिल हो गए तो हज़रत अबू बकर ने उस समय क़सम खाई कि अब उनकी ध्यान नहीं रखेंगे, जिस पर यह आयत अवतरित हुई- وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ अर्थात- तुम में से समृद्ध तथा समर्थ व्यक्ति अपने निकट सम्बंधियों और निर्धनों तथा अल्लाह के लिए हिजरत करने वालों को कुछ न देने की क़सम न खाएँ। अतः चाहिए कि क्षमा कर दें तथा अनदेखा करें। क्या तुम यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे और अल्लाह अन्यंत क्षमाशील एवं निरन्तर दया करने वाला है।

इस पर हज़रत अबू बकर ने दोबारा उनके लिए अर्थिक सहायता जारी फ़रमाई और जब अल्लाह तआला ने हज़रत आयशा को आरोप से बरी होने वाली आयत अवतरित फ़रमा दी तो फिर आरोप लगाने वालों को दंड भी दिया गया। कुछ रिवायतों के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा पर आरोप लगाने वाले जिन सहाबियों पर कोड़े लगवाए थे उनमें हज़रत मिस्तह भी शामिल थे।

बुख़ारी के बयान के अनुसार हज़रत आयशा इफ़्क की घटना का विवरण बयान करते हुए फ़रमाती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आक्रमण के अवसर पर जो आपने किया था, अपनी पत्नियों के नाम की पर्चियाँ डालीं। हज़रत फ़रमाती हैं कि मेरे नाम की पर्ची निकली तथा मैं आपके साथ गई। उस समय पर्दे का आदेश आ चुका था। मैं ऊँट की पीठ पर बिठाई जाती तथा हौदज सहित उतारी जाती, हम इसी प्रकार यात्रा करते रहे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने इस आक्रमण को पूरा करके वापस हुए तथा हम मदीना के निकट ही थे कि एक रात आपने यात्रा आरम्भ करने का निर्देश दिया। जब लोगों ने कूच करने का ऐलान किया तो मैं एक ओर शौच के लिए चल पड़ी तथा जब वापस हौदज की ओर आई तो क्या देखती हूँ कि ज़फ़ार के काले नगों वाला मेरा हार गिर गया है। मैं वापस लौटी अपना हार ढूंडने के लिए तथा उसको खोजने में मुझे कुछ समय लग गया। इतने में वे लोग जो मेरे ऊँट को तय्यार करते थे आए, और उन्होंने मेरा हौदज उठा लिया और वह हौदज मेरे ऊँट पर रख दिया जिस पर मैं सवार हुआ करती थी। वह ख़ाली था, और वे समझे कि मैं उसमें हूँ क्यूँकि मैं हल्की फुल्की थी, उन्होंने ऊँट को भी उठाकर चला दिया तथा स्वयं भी चल पड़े। जब पूरी सेना चली गई उसके बाद मैंने अपना हार भी ढूंड लिया। मैं डेरे पर वापस आई तो वहाँ कोई भी नहीं था, फिर मैं अपने उस डेरे की ओर गई जिसमें मैं थी, अर्थात वह स्थान, तथा मैंने सोचा कि वे मुझे न पाएँगे तो यहीं वापस लौट आएँगे। कहती हैं, मैं बैठी हुई थी कि इसी बीच मेरी आँख लग गई और मैं सो गई। सफ़वान बिन मुअत्तल सलमी ज़कवानी सेना के पीछे चला करते थे ताकि देख लें कि कोई चीज़ पीछे तो नहीं रह गई। कहती हैं- वे प्रातः काल में मेरे डेरे पर आए तथा उन्होंने एक सोए हुए इंसान का वजूद देखा और इन्ना लिल्लाहि पढ़ा। उनके इन्ना लिल्लाह पढ़ने पर मैं जाग उठी, वे अपनी ऊँटनी निकट ले आए, ऊँटनी बिठाई, मैं उस पर सवार हो गई तथा वे ऊँटनी की नकेल पकड़ कर चल पड़े, यहाँ तक कि हम सेना में उस समय पहुंचे जब लोग ठीक दोपहर के समय विश्राम करने के लिए डेरों में थे फिर जिसको नष्ट होना था नष्ट हो गया अर्थात इस बात पर कुछ लोगों ने दोष लगाने शुरु कर दिए। इस दोषारोपण का बीज लगाने वाला अब्दुल्लाह अबी बिन सलूल था। हम मदीना पहुंचे। मैं वहाँ एक महीने तक बीमार रही, दोष लगाने वालों की बातों का लोग चर्चा करते रहे तथा मेरी इस बीमारी के समय जो बात मुझे शंका में डालती थी वह यह थी कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में वह दया भाव नहीं देखती थी जो मैं आपसे अपनी बीमारी में देखा करती

थी। आप स. केवल भीतर आते और अस्सला अलैकुम कहते तथा किसी के माध्यम से पूछते कि अब कैसी है। मुझे इस आरोप का कुछ ज्ञान नहीं था। एक रात मैं तथा उम्मे मिस्तह सुपुत्री अबी रहम दोनों जा रही थीं कि इतने में वे अपनी चादर से अटकीं तथा ठोकर खाई, तब बोली कि दुर्भाग्य पूर्ण मिस्तह। मैंने उससे कहा कि क्या बुरी बात कही है तुमने, क्या तू ऐसे व्यक्ति को बुरा कह रही है जो बद्र की लड़ाई में उपस्थित था। उसने कहा कि अरे भोली भाली लड़की, क्या तुमने नहीं सुना जो बातें लोगों ने घढ़ी हैं।

तब उसने मुझे दोष लगाने वालों की बात सुनाई कि यह आरोप तुम पर लगाया गया है। बीमारी से मैं अभी उठी थी, दुर्बलता तो थी ही, यह बात सुनकर मेरी बीमारी बढ़ गई। जब मैं अपने घर लौटी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास आए, आपने अस्सलाम अलैकुम कहा और आपने पूछा अब तुम कैसी हो? मैंने कहा- मुझे अपने माता-पिता के यहाँ जाने की अनुमति दे दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मुझे अनुमति दे दी। मैं अपने वालिदैन के पास आई तो मैंने अपनी माँ से पूछा कि लोग क्या बातें कर रहे हैं? मेरी माँ ने कहा कि बेटी इस बात से अपनी जान को जंजाल में न डालो, अल्लाह की क़सम कम ही ऐसा हुआ है कि किसी व्यक्ति के पास कोई सुन्दर पत्नि हो जिससे वह प्रेम भी करता हो तथा उसकी सौतनें भी हों और फिर उसके विरुद्ध लोग बातें न करें। हज़रत आयशा कहती हैं- मैंने वह रात इस प्रकार काटी कि सुबह तक मेरे आँसू नहीं थमे, पूरी रात मुझे नींद नहीं आई और मैं रोती रही, जब सुबह उठी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली बिन अबी तालिब तथा उसामा बिन ज़ैद को बुलाया ताकि उन दोनों से अपनी बीवी के विषय में विचार विमर्श करें। उसामा ने कहा कि या रसूलुल्लाह, आयशा आपकी बीवी हैं तथा अल्लाह की क़सम हम उनमें भलाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते, हमने तो कोई दोष उनमें नहीं देखा। परन्तु अली बिन तालिब ने कहा कि या रसूलुल्लाह, अल्लाह तआला ने आप पर कुछ तंगी नहीं रखी, इनके अतिरिक्त अन्य महिलाएँ भी बहुत हैं। फिर हज़रत अली ने यह भी कहा कि आयशा की सेविका से पूछें कि कैसी हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बरीरा सेविका को बुलाया। आपने कहा बरीरा, क्या तुमने उसमें अर्थात हज़रत आयशा में कोई ऐसी बात देखी है जो तुम्हें शंका में डाले। बरीरा ने कहा कि कदाचित नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है कि मैंने हज़रत आयशा में कोई दोष पूर्ण बात नहीं देखी।

यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों को सम्बोधित करके फ़रमाया कि ऐसे व्यक्ति को कौन संभाले जिसने मेरी बीवी के बारे में मुझे दुःख दिया है। मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि अपनी बीवी में भलाई के अतिरिक्त कोई बात मुझे दिखाई नहीं दी। इस पर हज़रत सअद बिन मुआज़ खड़े हुए तथा उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह, ख़दा की क़सम उससे आपका बदला लूँगा जिसने यह दोष लगाया है, यदि वह औस क़बीले का हुआ तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूँगा, यदि वह हमारे भाईयों ख़िज़रज क़बीले से हुआ तो जो भी आप आदेश देंगे, हम उसको पूरा करेंगे। इस पर ख़िज़रज क़बीले के सअद बिन अबादा खड़े हुए और उन्होंने कहा- तुमने ग़लत कहा कि अल्लाह क़सम तुम उसे नहीं मारोगे तथा न ऐसा कर सकोगे। इस पर दोनों क़बीले भड़क उठे तथा आपस में लड़ाई शुरु हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको ठंडा किया, यहाँ तक कि वे चुप हो गए। हज़रत आयशा कहती हैं कि मैं पूरे दिन रोती रही, न मेरे आँसू रुकते और न मुझे नींद आती, मेरे माँ-बाप मेरे पास आ गए। हम उसी हाल में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भीतर आए और बैठ गए। जिस दिन से मुझ पर दोष लगाया गया था आप मेरे पास नहीं बैठे थे, एक महीना प्रतीक्षा करते रहे किन्तु मेरे विषय में आपको कोई वह्यी नहीं हुई। हज़रत आयशा कहती हैं कि आपने तश्हुद पढ़ा और फ़रमाया कि आयशा मुझे तुम्हारे विषय में यह बात आई है, सो यदि तुम बरी हो तो अल्लाह अवश्य तुम्हें बरी फ़रमाएगा और यदि तुमसे कोई ग़लती हो गई है तो अल्लाह से

क्षमा मांगो तथा उसके समक्ष तौबा करो क्यूँकि बन्दा जब अपने पाप को स्वीकार करता है और तौबा करता है तो अल्लाह भी उस पर दया करता है। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बात पूरी कर ली तो मैंने अपने बाप से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेरी ओर से उत्तर दीजिए। उन्होंने कहा- बख़ुदा मैं नहीं जानता कि मैं रसूलुल्लाह से क्या कहूँ, क्या बात करूँ। फिर मैंने अपनी माँ से कहा, उन्होंने भी यही जवाब दिया। मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि यदि मैं आपसे कहूँ कि मैं बरी हूँ और अल्लाह जानता है कि निःसन्देह बरी हूँ तो मुझे इस बात में सच्च नहीं समझेंगे और यदि मैं आपके सम्मुख किसी बात को स्वीकर कर लूँ यद्यपि अल्लाह जानता है कि मैं बरी हूँ तो आप इस बात पर मुझे सच्चा समझ लेंगे। अल्लाह की क़सम मैं अपनी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई उदाहरण नहीं देखती केवल यूसुफ़ के बाप के अतिरिक्त, उन्होंने कहा था कि धैर्य करना ही अच्छा है तथा अल्लाह ही से सहायता मांगनी चाहिए। इसके पश्चात मैं एक ओर हट कर अपने बिस्तर पर आ गई तथा आशा करती थी कि अल्लाह तआला मुझे बरी करेगा। हज़रत आयशा कहती हैं कि अल्लाह की क़सम, आप अभी बैठने के स्थान से अलग भी नहीं हुए थे कि इतने में आप पर वह्यी नाज़िल हुई। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह्यी की अवस्था जाती रही तो आप मुस्कुरा रहे थे और पहली बात जो आपने फ़रमाई यह थी कि आयशा अल्लाह का शुक्र करो क्यूँकि अल्लाह ने तुम्हें बरी कह दिया है। कहती हैं- इस पर मेरी माँ ने मुझसे कहा कि उठो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम कदाचित नहीं, मैं उनके पास उठकर नहीं जाऊँगी तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी का धन्यवाद नहीं करूँगी। अल्लाह तआला ने यह वह्यी की थी कि वे लोग जिन्होंने दोष लगाया है वह तुम ही में से एक दल है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने सीरत ख़ातमुनबिय्यीन में यह घटना बयान की है इसमें अधिक बात जो उन्होंने इसमें लिखी है वह यह है कि बुख़ारी में यह था कि हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि हाथ पर पाँव रख कर ऊँट पर चढ़ी, यहाँ यह है कि उन्होंने ऊँट के आगे के घुटनों पर पाँव रख दिया ताकि ऊँट झटके के साथ न उठे और हज़रत आयशा ऊँट पर सवार हो गईं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने जो इस घटना के विषय में अधिक बातें बयान की हैं, वे बयान करता हूँ। लिखते हैं कि हज़रत आयशा के विरुद्ध यह चर्चा इतनी बढ़ी कि कुछ सहाबी भी नादानी के कारण उनके साथ मिल गए जिनमें से एक हस्सान बिन साबित हैं और दूसरे मिस्तह बिन असासा, इसी प्रकार एक सहाबिया हमनः सुपुत्री हजश भी थीं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साली थीं। हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा को इस घटना से भारी आघात हुआ था तथा वे इस दुःख के कारण बीमार हो गईं और जब आपको उन पाखंडियों की बातों का पता चला तो आपकी बीमारी ज़ोर पकड़ गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने एक ख़ुत्बः में यह भी बयान फ़रमाया है कि हज़रत आयशा पर दोष लगाने के कारण तीन लोगों को कोड़े लगाए गए थे जिनमें से एक हस्सान बिन साबित थे, एक मिस्तह जो हज़रत अबू बकर के मसेरे भाई थे तथा एक महिला थीं, इन तीनों को दंड दिया गया और सुनन अबी दाऊद में भी इस दंड का वर्णन है। इस प्रकार कुछ विद्वानों की दृष्टि में यह दंड दिया गया तथा कुछ विद्वानों के अनुसार दंड नहीं दिया गया किन्तु उन सहाबियों को अल्लाह तआला ने क्षमा कर दिया, बद्री सहाबी थे, उनका एक उच्च स्तर था, अल्लाह तआला ने अंजाम उनका शुभ किया तथा उनके स्तर को स्थापित रखा। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाता चला जाए।

(हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने के लिए सुझाव का स्वागत है- अनुवादक-9781831652)

TOLL FREE NO: 180030102131